समास

समास का अर्थ है–'संक्षेपीकरण'। अर्थात् दो शब्दों के बीच प्रयुक्त विभक्ति-चिह्नों तथा योजक-चिह्नों को हटाकर उनको संक्षिप्त रूप में लिखना; जैसे–सेना का नायक = सेनानायक।

"दो या अधिक शब्दों के मेल से नए शब्द बनाने की क्रिया को समास कहते हैं।"

ध्यान दें–सामासिक प्रक्रिया में बने शब्द को **समस्तपद** तथा उसके पहले पद को **पूर्व पद** तथा बाद वाले पद को **उत्तर पद** कहते हैं।

तुलसी के द्‌वारा कृत = तुलसीकृत **समस्तपद** में 'तुलसी' पूर्व पद तथा 'कृत' उत्तर पद है।

समास-विग्रह–समासिक पद को उसके पहले वाली अवस्था में लाना समास-विग्रह कहलाता है।

जैसे–**गंगाजल** का विग्रह है–गंगा का जल

समास के भेद

समास के छह भेद होते हैं–

1. **अव्ययीभाव समास**–जिस समास का पूर्व पद अव्यय और प्रधान हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसमें पूर्व पद अव्यय होने के कारण समस्तपद अव्यय होता है।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण–

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
यथासमय	समय के अनुसार	निहत्था	बिना हथियार के
यथास्थिति	स्थिति के अनुसार	भरपूर	पूरी तरह भरा हुआ
गली-गली	प्रत्येक गली	सादर	आदर सहित
घर-घर	प्रत्येक घर में	प्रत्येक	एक-एक
हाथों-हाथ	हाथ ही हाथ में	आमरण	मरण-पर्यंत
रातों-रात	रात ही रात में	यथाविधि	विधि के अनुसार
बाकायदा	कायदे के अनुसार	रातभर	पूरी रात
निडर	बिना डर के	अनुरूप	रूप के अनुसार

2. तत्पुरुष समास–जिस समास में विभक्ति-चिह्नों का लोप हो तथा उत्तर पद प्रधान एवं पूर्व पद गौण हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। विभक्ति-चिह्नों के आधार पर इसके छह भेद होते हैं; जैसे–

(i) कर्म तत्पुरुष–

समस्तपद		विग्रह	समस्तपद		विग्रह
स्वर्गप्राप्त	–	स्वर्ग को प्राप्त	मरणातुर	–	मरने को आतुर
गृहगत	–	घर को गया हुआ	मरणासन्न	–	मरण को पहुँचा हुआ
शरणागत	–	शरण को आगत	ग्रामगत	–	ग्राम को गत

(ii) करण तत्पुरुष–

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
शोकसंतप्त	शोक से संतप्त	करुणापूर्ण	करुणा से पूर्ण
भयभीत	भय से भीत	मनगढ़त	मन से गढ़ा हुआ
अनुभवजन्य	अनुभव से पैदा हुआ	मानवनिर्मित	मानव द्वारा निर्मित
अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित	बाढ़ग्रस्त	बाढ़ से ग्रस्त

(iii) संप्रदान तत्पुरुष–

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
मालगाड़ी	माल के लिए गाड़ी	देशार्पित	देश के लिए अर्पित
पंचायतघर	पंचायत के लिए घर	स्नानागार	स्नान के लिए आगार (घर)
प्रयोगशाला	प्रयोग के लिए शाला	संचारगृह	संचार के लिए घर
मुसाफिरखाना	मुसाफिरों के लिए खाना (घर)	पाठशाला	पाठ के लिए शाला

(iv) अपादान तत्पुरुष–

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त	देशनिकाला	देश से निकाला हुआ
पदच्युत	पद से च्युत	धर्मविमुख	धर्म से विमुख
धनहीन	धन से हीन	शोकमुक्त	शोक से मुक्त

(v) संबंध तत्पुरुष–

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
प्रसंगानुसार	प्रसंग के अनुसार	देवमंदिर	देवों का मंदिर
गंगाजल	गंगा का जल	भारतरत्न	भारत का रत्न
क्रीड़ाक्षेत्र	क्रीड़ा का क्षेत्र	गंगातट	गंगा का तट
जल-प्रवाह	जल का प्रवाह	आज्ञानुसार	आज्ञा के अनुसार

(vi) अधिकरण तत्पुरुष–

समस्तपद	विग्रह	समस्तपद	विग्रह
दानवीर	दान में वीर	सिरदर्द	सिर में दर्द
वनवास	वन में वास	पर्वतारोही	पर्वत पर चढ़ने वाला
ध्यानमग्न	ध्यान में मग्न	लोकप्रिय	लोक में प्रिय
आत्मविश्वास	आत्म (खुद) पर विश्वास	धर्मवीर	धर्म में वीर

3. **द्वंद्व समास**–जिस समास में दोनों पद प्रधान हों तथा उनके बीच और, या, तथा अथवा का लोप हो उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

उदाहरण–

समस्तपद		विग्रह
मोह-माया	–	मोह और माया
राजा-रंक	–	राजा और रंक
लोक-परलोक	–	लोक और परलोक
रुपया-पैसा	–	रुपया और पैसा
खट्टा-मीठा	–	खट्टा और मीठा
लाभ-हानि	–	लाभ और हानि
ऊँच-नीच	–	ऊँच और नीच
भाई-बहन	–	भाई और बहन

समस्तपद		विग्रह
राम-कृष्ण	–	राम और कृष्ण
राम-लक्ष्मण	–	राम और लक्ष्मण
लाल-पीला	–	लाल और पीला
भूख-प्यास	–	भूख और प्यास
नदी-नाले	–	नदी और नाला
नानी-नाना	–	नानी और नाना
दाल-रोटी	–	दाल और रोटी

4. **बहुब्रीहि समास**–जिस समास में पूर्व एवं उत्तर दोनों ही पद गौण हों तथा समस्तपद किसी अन्य पद (तीसरे पद) की ओर संकेत करता हो, उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं।

उदाहरण–

चतुर्भुज – चार भुजाएँ हैं जिसकी अर्थात् **भगवान विष्णु**।
चतुरानन – चार आनन हैं जिसके अर्थात् **ब्रह्माजी**।
पंचानन – पाँच आनन हैं जिसके अर्थात् **शिव**।
दशानन – दस आनन हैं जिसके अर्थात् **रावण**।
त्रिवेणी – तीन वेणियों का संगम है जहाँ अर्थात् **प्रयागराज**।
अंशुमाली – अंशु (किरणें) हैं माला जिसकी अर्थात् **सूर्य**।
महावीर – महान वीर है जो अर्थात् **हनुमान**।
चंद्रशेखर – शिखर पर चंद्र है जिसके अर्थात् **शिवजी**।
श्वेतवसना – श्वेत वस्त्र धारण करती हैं जो अर्थात् **सरस्वती जी**।

5. **कर्मधारय समास**–जिस समास में एक पद **विशेषण** और **विशेष्य** या **उपमान** और **उपमेय** हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

उदाहरण–

समस्तपद		विग्रह
महापुरुष	–	महान है जो पुरुष
कालीमिर्च	–	काली है जो मिर्च
नीलगाय	–	नीली है जो गाय
प्राणप्रिय	–	प्राणों के समान प्रिय
विद्याधन	–	विद्या रूपी धन

समस्तपद		विग्रह
लालटोपी	–	लाल है जो टोपी
कुबुद्धि	–	बुरी है जो बुद्धि
दुश्चरित्र	–	बुरा है जो चरित्र
ग्रंथरत्न	–	ग्रंथ रूपी रत्न
क्रोधाग्नि	–	क्रोध रूपी अग्नि

6. द्विगु समास–जिस समास का पहला पद संख्यावाची हो, उसे द्विगु समास कहते हैं।

उदाहरण–

एकदंत	–	एक दाँतवाला
त्रिभुवन	–	तीन भुवनों का समाहार
चतुरानन	–	चार आनन का समाहार
चौराहा	–	चार राहों का समाहार
चौमासा	–	चार महीनों का समाहार
चतुर्मुख	–	चार मुँह का समाहार
पंचवटी	–	पाँच वृक्षों का समाहार
नवग्रह	–	नौ ग्रहों का समूह
दशानन	–	दस आनन का समूह
नवनिधि	–	नौ निधियों का समूह
अष्टाध्यायी	–	आठ अध्यायों का समूह
अष्टसिद्धि	–	आठ सिद्धियों का समूह
शताब्दी	–	एक सौ अब्दों (वर्षों) का समूह।

अभ्यास-प्रश्न

1. नीचे कुछ सामासिक शब्द दिए गए हैं। इनका विग्रह करके समास का नाम लिखिए–

मुरलीधर	मुरली को धारण करता है जो अर्थात् श्रीकृष्ण	बहुब्रीहि समास
पीतांबर	.....	.....
वनवास	.....	.....
हस्तलिखित	.....	.....
राजा-रंक	.....	.....
बाकायदा	.....	.....
शरणागत	.....	.....
अकालपीड़ित	.....	.....
पाठशाला	.....	.....
पर्वतारोही	.....	.....
गंगातट	.....	.....
मोहमाया	.....	.....
चक्रपाणि	.....	.....
अष्टाध्यायी	.....	.....

उत्तर

पीत है जो अंबर	कर्मधारय समास
वन में वास	अधिकरण तत्पुरुष
हाथ से लिखा हुआ	करण तत्पुरुष
राजा और रंक	द्वंद्व समास
कायदे के अनुसार	अव्ययीभाव समास
शरण को आगत	कर्म तत्पुरुष
अकाल से पीड़ित	करण तत्पुरुष
पाठ के लिए शाला	संप्रदान तत्पुरुष
पर्वत पर चढ़ने वाला	अधिकरण तत्पुरुष
गंगा का तट	संबंध तत्पुरुष
मोह और माया	द्वंद्व समास
चक्र है पाणि में जिसके अर्थात् विष्णु	बहुब्रीहि समास
आठ अध्यायों का समूह	द्विगु समास

2. नीचे कुछ शब्दों के विग्रह दिए गए हैं। आप इनसे सामासिक शब्द बनाकर समास का नाम लिखिए–

मृग के समान आँखें हैं जिसकी	=	मृगनयनी	–	कर्मधारय समास
पूरी तरह भरा हुआ	=	.....	–	.....
युद्ध के लिए भूमि	=	.....	–	.....
मानव द्वारा बनाया हुआ	=	.....	–	.....
राम और लक्ष्मण	=	.....	–	.....
नीला है जो गगन	=	.....	–	.....
आठ अध्यायों का समूह	=	.....	–	.....
घोड़े पर सवार	=	.....	–	.....

उत्तर

भरपूर	अव्ययीभाव	नीलगगन	कर्मधारय समास
युद्धभूमि	संप्रदान तत्पुरुष	अष्टाध्यायी	द्विगु समास
मानवनिर्मित	करण तत्पुरुष	घुड़सवार	अधिकरण तत्पुरुष
राम-लक्ष्मण	द्वंद्व समास		

3. किसी छात्र ने सामासिक पदों का विग्रह किया पर क्रम गलत होने के कारण वे अशुद्ध हो गए हैं। आप उन्हें शुद्ध करके पुनः लिखिए–

ऋणमुक्त	तीन फलों का समूह	द्विगु समास
दिगंबर	दिशाएँ हैं वस्त्र जिनके अर्थात् जैन मुनि	द्वंद्व समास
अपना-पराया	पाँच आनन का समूह	अव्ययीभाव समास

पर्वतारोही	अपना और पराया	अधिकरण समास
पंचानन	ऋण से मुक्त	बहुब्रीहि समास
अजन्मा	बिना जन्मे	द्विगु समास
त्रिफला	पर्वत पर चढ़ता है जो	अपादान तत्पुरुष

उत्तर

ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त	अपादान तत्पुरुष
दिगंबर	दिशाएँ हैं वस्त्र जिनके अर्थात् जैन मुनि	बहुब्रीहि समास
अपना-पराया	अपना और पराया	द्वंद्व समास
पर्वतारोही	पर्वत पर चढ़ने वाला	अधिकरण तत्पुरुष
पंचानन	पाँच आनन का समूह	द्विगु समास
अजन्मा	बिना जन्मे	अव्ययीभाव समास
त्रिफला	तीन फलों का समूह	द्विगु समास

स्वयं करें

1. निम्नलिखित समस्तपदों का विग्रह कर समास का नाम लिखें–

सप्तपदी, तिरंगा, पंचानन, नीलकंठ, शताब्दी, घनश्याम, माता-पिता, कैलाशपति, सूरचरित, मुसाफिरखाना, पदच्युत, गंगाजल, आपबीती, आमरण, प्रत्यक्ष।

2. नीचे लिखे सामासिक पदों और समास के नाम का सही जोड़ा बनाकर लिखिए–

समस्तपद	समास के नाम	समस्तपद	समास के नाम
नवनिधि	कर्मधारय समास	चतुर्भुज	द्विगु समास
यथासमय	द्वंद्व समास	लखपति	कर्म तत्पुरुष
कमलनयन	अव्ययीभाव	लक्ष्यभ्रष्ट	द्विगु समास
अष्टधातु	बहुब्रीहि समास	यथारुचि	संबंध तत्पुरुष
ऊँच-नीच	अपादान तत्पुरुष	यशप्राप्त	अव्ययीभाव समास

3. नीचे कुछ पदों के लिए विग्रह दिया गया है। आप उनके सामासिक पद बनाकर समास का नाम लिखिए–

महान है जो आत्मा, पाँच आबों का समूह, जेब के लिए खर्च, महान हैं जो वीर, लंबा उदर है जिसका अर्थात् गणेश जी, गुरु के लिए दक्षिणा, रण में वीर, बिना संदेह के, विधि के अनुसार।

रचनात्मक मूल्यांकन

क्रियाकलाप– समास पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न-प्रपत्र।

उद्देश्य–
- समास और समास-विग्रह की अवधारणा स्पष्ट करना।
- शब्द-निर्माण की प्रक्रिया से अवगत कराना।
- भाषा को प्रभावी बनाना।

प्रक्रिया– • अध्यापक छात्रों में निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्न-प्रपत्र बाँटेंगे।

• विद्यार्थी उपयुक्त विकल्प पर निशान लगाएँगे।

प्रश्न-प्रपत्र

1. 'यज्ञशाला' शब्द में समास है–

कर्मधारय समास	☐	करण तत्पुरुष समास	☐	संप्रदान तत्पुरुष समास	☐

2. 'नवरत्न' का विग्रह होगा–

नवरत्नों का समाहार	☐	नवरत्न रहित	☐	नया रत्न बनाने वाला	☐

3. 'आमरण' में समास है–

कर्मधारय समास	☐	द्विगु समास	☐	अव्ययीभाव समास	☐

4. देशनिकाला' में समास है–

करण तत्पुरुष	☐	संप्रदान तत्पुरुष	☐	अपादान तत्पुरुष	☐

5. 'राहखर्च' का विग्रह होगा–

राह में खर्च	☐	राह के लिए खर्च	☐	राह को खर्च	☐

मूल्यांकन के आधार बिंदु– प्रत्येक दो सही उत्तर के लिए **एक अंक**।

❑❑❑